आजादी की लड़ाई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भूमिकाः एक अध्ययन

डॉ0 निर्मल कुमार[1] डॉ0 रवि वर्मा [2]

1. शोधप्रज्ञ, (इतिहास) बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
2. प्रो0 (डॉ) रवि वर्मा (सेवानिवृत), प्रोफेसर एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, बाबा भीमराव अम्बेदकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार।

सारांश

आजादी की लड़ाई के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनने वाली सरोजनी नायडू ने जहॉ स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है वही महिलाओं को उन्होंने ने आजादी के आन्दोलन से जोड़ने और नारी मुक्ति में अहम भूमिका निभाई। उन्होने महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना जगायी। स्वतंत्रता सेनानियों से मिलकर महिलाओं पे हो रहे अत्याचार के खिलाफ आन्दोलन छेड़ा। तथा गॉधी जी ने भी इन सभी महिलाओं का भरपूर साथ दिया। गॉधी जी महिलाओं पर हो रहें अत्याचार से बहुत दुःखी थे गॉधी जी कई महिलाओं के सम्पर्क में रहें और इन महिलाओं को किसी न किसी रूप से गॉधी जी की सोंच कों प्रभावित किया। गॉधी जी और सरोजनी नायडू ने बहुत पहले ही निष्कर्ष पर पहुॅच चुके थे कि जब तक महिलाएॅ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं कार्य करेंगी, भारत की मुक्ति कई मायनों में नहीं हो सकती। न तो वृहत अर्थ में राजनीतिक मुक्ति और ना ही आर्थिक एवं आध्यात्मिक मुक्ति।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषाणात्मक एवं वर्णात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्त्रोतो का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः इन्टरनेट से प्राप्त सामग्रियों, प्रकाशित ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं में छपे विवरण, निबंध एवं लेख तथा विभिन्न शोध–ग्रंथों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

भूमिका

कॉग्रेस की स्थापना यानि 1885 से प्रथम विश्वयुद्ध के शुरूआत अर्थात् 1914 तक भारतीय जनमानस में राजनैतिक जागृति उत्पन्न हो चुकी थी। अंग्रेजी की भारत विरोधी नीतियों के कारण कांग्रेस की विचारधारा परिवर्तित होने लगी थी और पूरे देश में राष्ट्रीय जोश की एक नयी लहर फैलने लगी थी राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नया आयाम दिया जाने लगा जिसमें भारतीय महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर स्वतंत्रता प्राप्ति की मुहिम में शामिल होने लगी जिससे आन्दोलन की गति को काफी बल मिला। श्रीमति सरोजनी नाइडू एनी बेसेंट आदि जैसी कई महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने शौर्य का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन धीरे–धीरे सवल होता गया।

स्वदेशी आन्दोलन में महिलाओं की सक्रियता (चाहे कांग्रेस के अंदर हो या बाहर) ने निश्चित रूप से महिलाओं को राष्ट्रीय नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय पटल पर ला कर खड़ा कर दिया। जैसा कि हमने देखा है स्वदेशी आंदोलन ने स्वशासन, स्वनिर्मित वस्तुएँ, स्वयंसेवी सस्थाएॅ, स्वयंसेवी दुकानें इत्यादि शब्दों का न केवल इस्तेमाल हमारी स्वनिर्भरता विशेष रूप से महिलाओं की स्वनिर्भरता सुनिश्चित करने का उद्देश्य से किया गया। बल्कि इसे हमारे जीवन में कार्यान्वित करने के उद्देश्य से किया गया। इस समय की स्थिति काफी विषम थी। लोगों के समक्ष दोहरी समस्या थी एक तरफ तो लगातार स्वयं को मजबूत करते रहने की और दूसरी तरफ विरोधियों का सामना करते रहने की। परन्तु अगर महिलाओं की बात की जाए तो उन्हें तीन–तीन काम एक साथ करने पड़ते थे खुद को सशक्त बनाना, स्वराज्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहना और सबसे महत्वपूर्ण अपने आप को स्वतंत्रता आन्दोलन की लड़ाई में योग्य साबित करने के लिए अपने ही देशवासियों के विरोध का सामना करना। एक ओर जहाँ सामान्य भारतवासियों को सिर्फ दूसरे देशों और लंदनवासियों के सामने अपने आप को साबित करना था। यही दूसरी और महिलाएॅ दो–दो स्तर पर बड़ी बहादुरी से अर्न्तविरोध और वाह्य विरोध दोनों का सामना कर रही थी। जहॉ एक और भारतीय समाज सुधारक नेता कुलीन वर्गीय भारतीय महिलाएँ इनमें मदद कर रही थी वही विदेशी महिलाओं का योगदान भी कमतर नहीं आंका जा सकता। स्वदेशी आंदोलन के दौरान सिस्टर निवेदिता होमरूल में ऐनीवेसेन्ट के जैसे कई महिलाओं के योगदान को देखने से पता चलता है कि किस तरह उन्होंने क्रान्ति ला दी। इन महिलाओं के उद्देश्य, त्याग और समर्पण की भावना तो कई बार हमें इन पर अविश्वास करने पर

विवश कर देती है, कि क्या ये सचमुच भारतीय महिलाएँ नहीं थी। उनका भारत के प्रति प्यार और यहाँ की महिलाओं के उत्यान के लिए इनके सतत प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय और सम्मान जनक है।

1914 से 1919 ई. का काल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल में भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी का व्यापक प्रभाव रहा। इसी युग में 1919 ई. में गृहशासन होम रूप आंदोलन प्रारंभ हुआ 1916 ई. में कांग्रेस लीग समझौता हुआ और कांग्रेस के नरम और उग्र दल में समझौता हुआ। इसी काल में ब्रिटिश सरकार ने 20 अगस्त 1917 ई. को महत्वपूर्ण घोषणा की कि उसका उदय भारत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना है।

महात्मा गाँधी ने भी तिलक के होमरूल आंदोलन की भूरी–भूरी प्रशंसा की है। उन्होंने स्वयं उनके भाषणों वे लोखों में तिलक के होमरूल आंदोलन की समय की माँग बताया। उनकी मान्यता थी कि जनता की समयाएँ सुलझाने के लिए होमरूल आवश्यकता है। वस्तुत महिलाओं में बढ़ रही जागरूकता और उनके हालात में आ रहे निरंतर बदलाव निश्चित रूप से न सिर्फ उनके बल्कि संपूर्ण भारत के उज्जवल भविष्य की ओर इशारा कर रहे थे। हर क्षेत्र में धीरे–धीरे महिलाओं की भागीदारी पंख फैलाती जा रही थी। महिलाओं की इस भागीदारी का श्रेय सिर्फ महिलाओं को देना उन पुरूषों के साथ अन्याय करना होगा जिन्होंने उनकी स्थिति किसी स्वार्थ की वजह से नहीं बल्कि उनके हक को वापस दिलाने के लिए सुदृढ़ करने के उद्देश्य से की।

वस्तुतः गाँधी जी ने जब तक देश के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश नहीं किया था, स्त्रियों की लोकोपकारिणी शक्तियों का पूर्णतया प्रकट होने का अवसर नहीं मिल पाया था गाँधीजी के प्रयास से इस दिशा में काफी सफलताएँ मिली। स्वधीनता के युद्ध की उन्होनें ऐसा अपूर्व मोड़ दिया कि असंख्य बहनें पर्दे और अंतः पुर से बहार निकल पड़ी और स्वतंत्रता के यज्ञ में अपना–अपना हविर्भाग अर्पण करने के लिए न केवल आपस में होड़ करने लगी, बल्कि कहीं–कहीं पुरूषों से भी आगे बढ़ गयी। शराब और विदेशी कपड़े की दुकानों के सामने धरना देने में भी वह पुरूषों से आगे रही। धरासना और बड़ाला के नमक सत्याग्रह में उन्हेंने जिस वीरता का परिचय दिया, यह दृश्य देव–दुर्लभ था। संसार के अन्य देशों में भले ही महिलाओं को

इतनी संख्या में नहीं हैं जितनी भारतीय संसद या अन्य सभाओं में है। इतने बड़े देश की प्रधानमंत्री बनने का गौरव तो सबसे पहले भारतीय नारी को ही प्राप्त हुआ है। आज भारत के सार्वजनिक जीवन में जितनी महिलाएँ भाग ले रही है। उन सब के मूल में गाँधीजी का ही प्रभाव है। गॉधी युग ने नारी जगत में एक नयी चेतना उत्पन्न कर दी। गॉधीजी की सोच और दूरदर्शिता उन्हें तत्कालीन नेताओं और सुधारकों से अलग करती है। चाहे उदारवादी हो या उग्रवादी सब देश की स्वतंत्रता को अपना अंतिम लक्ष्य मानते थे। पर महात्मा गाँधी ऐसे विचारक थे जिनका उद्देश्य सामाजिक पुरर्नचना था और आजादी की लड़ाई इस लक्ष्य प्राप्ति का साधन।

महात्मा गॉधी औरतों पर हो रहे अत्याचार से बहुत दुःखी थे। 1918 ई. में ही वे इस बात को समझ चुके थे कि हमारे ज्यादात्तर आंदोलन महिलाओं की दशा की वजह से ही आधे में ही रूक जाते है। हमारे ज्यादात्तर काम वांछित परिणाम नहीं देते, हमारा वर्ग उन व्यापारियों के जैसा है जो व्यापार में पर्याप्त पूँजी नहीं लगाते। दरअसल उनका यह मानना था कि महिलाओं की मौजूदगी और भागीदारी राष्ट्र के पुर्नरूत्थान और पुनर्निर्माण के जटिल कार्य को पूरा करने के लिए एक ऐसी जरूरत है जिसको चाहकर भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जैसा कि उन्होंने 1925 ई. में मद्रास के एक महिला महाविद्यालय में भाषण के दौरान कहा था–..... मैं बहुत पहले इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका हूँ कि जब तक महिलाएँ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं कार्य करेंगी, भारत की मुक्ति कई मायनों में नहीं हो सकती। न तो वृहत अर्थ में राजनीतिक मुक्ति और न ही आर्थिक एवं आध्यात्मिक मुक्ति।

इन दो मूल रिश्तों के अलावा यह अवश्य याद रखना चाहिए कि सारी जिन्दगी गाँधी जी कई महिलाओं के सम्पर्क में रहे और इन महिलाओं ने किसी न किसी रूप में गांधीजी की सोच को प्रभावित किया। ऐसी कई साधारण तथा अतिसाधारण महिलाएँ जो उनकी सहकर्मी, समर्थक, प्रशंसक इत्यादि रूप में आयी और अपने कार्यो और प्रतिभाओं से उनकी सोच को और अधिक उन्नत करती रही। ये तो संभव नहीं है, कि उनके सम्पर्क में आने वाली सारी महिलाओं के नाम गिनाए जा सके फिर भी उनमें से कुछ प्रख्यात महिला सहभागियों के नाम जिन्होंने बापू को कई मायनों में प्रभावित किया ये है – विदेशी महिलाएँ–ऐनी बेंसेट, ओलिवर, स्क्रीनर, मिली ग्राहम, पोलक, मार्गेट कजन्स, मुरियल लेस्टर और मंडलान म्लेड (या मीनाबेन जिनका नाम गांधी जी ने रखा था) और भारतीय महिला सहकर्मियों में सरोजनी नायडू सरला देवी चौधरानी, अमृता कौर, कमला देवी चट्टोपाध्याय, सुशीला नायर और प्रसिद्ध नेहरू परिवार की महिलाएँ। बापू

कथा में सन्तकन्याओं का उल्लेख किया गया है – इस सप्त कन्याओं में मीरा, प्रेमा, सुशीला पं. सुशीला नायर, राजकुमारी अमृत कौर, मनुडी और अभ्यतुस्सलमा का नाम आता है।

यहॉ यह उल्लेखनीय है कि इन सातों बहनों ने बापू को अपना 'धर्मपिता' मानकर अपना जीवन उनके कार्यो में अर्पित कर दिया। सुश्री मनु ने तो उन्हें पिता नहीं माता माना है। गॉधीजी ने एक–एक दो–दो नहीं बल्कि सैकड़ो पत्र लिखकर इन सब बहनों का मार्ग दर्शन किया है। वास्तव में यह पत्र साहित्य पढ़ने लायक है।

इसी तरह यदि उनके आन्दोलनों की बात करे तो यह पुरूषों से ज्यादा महिलाओं के लिए संगत लगती है। खुद गांधीजी महिलाओं को आहिंसा का अवतार माना है इसीलिए नहीं कि ये कमजोर है जैसा कि पुरूष घमंड में आकर अक्सर सोचने लगते है, बल्कि इसलिए कि उनमें अपार साहस और आत्मत्याग की असीमित क्षमता है। गॉधीजी की नजरों में अहिंसा के लिए मजबूत दिल, त्याग की भावना, स्वेच्छापूर्वक आत्मवंदना की स्वीकृति होनी चाहिए जो सब के सब महिलाओं में प्रचुरता में पाया जाता है। असहयोग आन्दोलन हो या नमक आन्दोलन महिलाओं के हुजूम और उनके उल्लेखनीय योगदान भारत के इतिहास में अपनी एक खास जगह रखते है।

गॉधी आश्वस्त थे कि असहयोग कार्यक्रम में मुख्य लक्ष्यों को पूरा नही किया जा सकता अगर आधी आबादी इससे अलग रहे। रौलेट के विरोध में हड़ताल रखे जाने के दिन ही उन्होंने लेडिज प्रोटेस्ट मीटिंग में महिलाओं से पुरूषों को सहयोग देने की अपील की थी। इस तरह का आग्रह उन्होंने एक बार नहीं कई बार किया था। शांति निकेतन में महिलाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था– ''स्वराज्य की आशा करना व्यर्थ होगा जब तक इस प्रयास में महिलाऍ पूर्णरूप से योगदान नहीं देती या राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा करने के अपने कर्तव्यों को स्वीकार नहीं करती या खो जाने पर इसे वापस हासिल करने के फर्ज का अनुपालन नहीं करती।''

जालियॉंवाला बाग हत्याकाण्ड को लेकर पंजाब की महिलाऍ एक कदम आगे बढ़ चुकी थी। इस संदर्भ में जैसा कि लाहौर में एक सार्वजनिक बैठक को याद करती हुई मनमोहिनी सहगल कहती है– ''जब बैठक चल रही थी, पुलिस आई और महिलाओं को अपनी जगह छोड़ने के लिए निवेदन किया ताकि वे पुरूषों पर लाठी चार्ज कर सकें, परन्तु महिलाऍ हटने को राजी नहीं हुई बाद में बैठक भंग हो गई तथा पुरूष और महिलाओं ने जुलूस

निकाला। ऐसा पहली बार हुआ था कि महिलाओं ने एक सार्वजनिक जुलूस में भाग लिया था, नारे लगाए थे और पुरूषों के साथ गलियों में साथ–साथ घुमी थी।'' ऐसे बहुतेरे सार्वजनिक सभाओं में महिलाएॅ प्रेरक गीत भी गाया करती थी। इनमें से एक गीत बहुत ही प्रसिद्ध हुआ था– ''अभी नहीं हारना भावे साड़ी जान जावे।'' अर्थात् हम अपे जीवन की कीमत पर भी हार नहीं मानेंगे। इस तरह से पंजाबी महिलाओं ने भी स्वदेशी कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

सरला देवी जो पहले से ही देश सेवा में कार्यरत थीं, चरखा एवं खादी संदेश को पंजाबी महिलाओं के बीच प्रचारित करने में मुख्य भूमिका निभाई। व्यक्तिगत स्तर पर ना केवल उन्हेंने अपने ज्यादातर जेवर दान कर दिए बल्कि कलकता विश्वविद्यालय का पद्मावती स्वर्णपदक का भी त्याग कर दिया, जिसको पाने वाली वो पहली महिला थी। उन्होंने सूत काटना भी सीखा और खादी को अपनाया। गांधीजी को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा– ''खद्दर साड़ी उनके श्रोताओं को उनके भाषण से ज्यादा प्रभावित करती थी और उनके गाने उसके बाद आते थे, और भाषण सबसे अंत में।''

सरला देवी के अलावा जो महिलाएॅ पंजाब में इस आन्दोलन को आगे बढ़ा रही थी। वे थी राधा देवी, पार्वती देवी और लाडो रानी जुल्सी। ज्यादातर महिला बैठको ंका विषय था ''हमारी गरीबी मुख्य रूप से लोगों द्वारा स्वदेशी का त्याग करने की वजह से है,'' और इन सभाओं में चंदा, चरखा और वंदा का बार–बार आग्रह किया जाता था। विदेशी कपड़ो के बहिष्कार के संदर्भ में, पगड़ियों और रंगीन दुपट्टों के ढ़ेर को सभा के अंत में आग लगा दिया जाता था। स्वदेशी प्रयास को आगे बढ़ाते हुए लाहौर में एक आन्दोलन चलाया गया। जिसका आधार था शमां से शमां जलती है। इस आन्दोलन का ध्येय था कि जिनते भी चरखा और खादी के प्रति दृढ़ संकल्पित है वह व्यक्ति कम से कम दस अन्य व्यक्तियों को चरखा कार्यक्रम में भाग लेने को और खद्दर पहनने को उत्साहित करें। अमृतसर और लुधियाना में, सरला देवी ने महिलाओं के लिए सूत कातना सिखाने की कक्षा खोली।

गुजराती क्षेत्रों में इस आन्दोलन की जड़े ज्यादा गहरी थी। यह स्वभाविक था क्योंकि एक तो गांधीजी खुद अहमदाबाद में रहते थे और विभिन्न हिस्सों में घुम–घुमकर कार्य आगे बढ़ाने में लिप्त थे दूसरा बहुत सारी महिला सहकर्मियों और आश्रम की बहनों ने गुजरात के कई शहरों, नगरो ंऔर गॉवों में राष्ट्रवादी संदेश का प्रचार करने में उनकी मदद की।

गुजराती महिलाएँ गांधीजी के दक्षिण अफ्रिका से वापस आने के समय से ही उनसे जुड़ी थी। 1915 ई. जब उन्होंने कोथराव में अपना आश्रम खोला तो दो महिलाएँ शारदा मेहता और चम्पाबेन ने विशेष रूप से उनकी मदद की।

शारदा मेहता गुजरात की पहली महिला स्नातकों में से एक थी। 1919 ई. गांधीजी के गुजराती अखबार नवजीवन के सम्पादन में इन्दुलाल याज्ञनिक की मदद की। इन शुरूआती सालों में जो उनके सबसे ज्यादा करीब रही वो थी अनुसूया साराभाई जो अम्बालाल मिल मालिक की बहन थी। ये 1914 ई. से ही मजदूरों के बच्चियों के लिए अमरपुरा चॉल में एक स्कूल चला रही थी और साथ ही साथ खुद मजदूरों के लिए वयस्क शिक्षा क्लासेज भी ले रही थी। उनके और गांधीजी के संयुक्त प्रयास से ही अहमदाबाद टेक्सटाइल मिल की हड़ताल सफलतापूर्वक समाप्त हो गयी। बाद में अनुसूया खेड़ा सत्याग्रह के दौरान जोश–खरोश के साथ भागीदारी की और रौलेट एक्ट के विरोध में गांधीजी के सत्याग्रह प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करने में आगे थी।

गांधीजी के इस अभियान में अनुसूया के साथ–साथ कस्तूरबा भी थी। इस अभियान में चरखा, खादी, विदेशी वस्तुओं, संस्थानों के बहिस्कार के साथ–साथ छुआ–छूत हटाने और हिन्दु–मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना भी शामिल था। कई छात्राओं ने स्कूल–कॉलेज छोड़ दिए। इनमें मणिबेन पटेल और मिस देसाई प्रमुख थी, जिसकी प्रशंसा गांधी ने भी सार्वजनिक रूप से की थी। उसके बाद मणिबेन ने स्वदेशी संदेश फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और गंगाबेन मजूमदार ने भी इसमें उनका साथ दिया था।

चरखा खादी अभियान में साधारण महिलाओं की बढ़ती भागीदारी इस बात का सबूत था कि राष्ट्रीय स्त्री सभा और बम्बई की सारी महिला संगठनों का प्रयास रंग ला रहा था। यह पुरानी धारणा थी कि खादी का इस्तेमाल सिर्फ डस्टर की तरह किया जा सकता है को गलत साबित करने के लिए राष्ट्रीय स्त्री सभा ने मुख्य रूप से कढ़ाई वाले खादी निर्मित रेडिमेड कपड़ो को घरेलू उपयोग हेतु निर्माण किया और खादी से बनी वस्तुओं की शहर में प्रदर्शनी भी लगवाई। आन्दोलन के अंतिम चरणों में समाज के विभिन्न वर्गो से आने वाली महिलाएँ जिन्होंने घर की देखभाल, चाय पार्टी में शिरकत और क्लब में जाने के अलावा कोई कार्य नहीं किया था, खादी को लेकर घर–घर गई। ऐसे जोश, दृढ़ संकल्प और समर्पण के साथ महिलाओं ने 1920–20 के दौरान कार्य की गांधीजी को कहना पड़ा– ''बम्बई की महिलाएँ यहाँ के व्यापारियों

की तरह जागृत है। ऐसी प्रगतिशील महिलाएँ यहाँ के अलावा हम कहॉ पायेंगे। स्वदेशी आन्दोलन इसके सहयोग के बिना कोई प्रगति नहीं कर सकता। जिसका अर्थ है कि हम स्वराज भी इसके बिना नहीं जीत सकते।''

यूँ तो पश्चिमी भारत में भी महिलाओं ने सक्रिया रूप से भागीदारी की थी, पर असहयोग–खिलाफत में वृद्धि दक्षिणी भारत में ज्यादा परिलक्षित होती है। हालांकि दक्षिण की सबसे प्रसिद्ध महिला नेता ऐनी बेसेंट गांधीजी के विरूद्ध थी। कर्नाटक क्षेत्र इस आन्दोलन से बहुत हद तक अछूता रहा, आन्ध्र प्रदेश आदि क्षेत्रों में महिलाओं ने इस काल में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। विशेषकर आन्ध्र प्रदेश में महिलाऍ प्रभातफेरी और अन्य जुलूसों के दौरान सार्वजनिक सभाओं में शिरकत करने लगी और पुरूष स्वयंसेवकों के साथ देशभक्ति गीत गाने लगी। विजयवाड़ा में आयोजित ए.आई.सी.सी. सत्र में गांधीजी के आगमन के साथ महिलाओं की भागीदारी और भी बढ़ गयी। गांधीजी ने कुछ अन्य शहरों जैसे कोकोनाडा, राजमुंदरी, एलौर इत्यादि का दौरा किया और महिलाओं से विशेष आग्रह किया। परिणामस्वरूप कई महिलाओं ने अपने गहने और कुछ नगद दे दिये। इनमें से सबसे बड़ा उल्लेखनीय दान एलोर की अन्नपूर्णा देवी और 11 साल की दुर्गाबाई देशमुख की तरह से आया। दुर्गाबाई ने न सिर्फ अपने कंगन दान किए बल्कि इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भागीदारी भी करती रही। कुछ महिलाओं ने जनसाधारण को प्रभावित करने की उनकी योग्यता में पुरूषों को भी मात दे दी। दुत्वुरू सुबम्मा, पोनक्का कनावम्मा और उन्नव लक्ष्मीबयम्मा ऐसी ही कुछ नाम है। सुबम्मा तो सबसे उल्लेखनीय महिला नेता थी। 1922 ई. में यह गिरफ्तार और कैद की जाने वाली पहली आन्ध्र महिला बनी। उनके उदाहरण महिलाओं को हिस्सा लेने के लिए उसकाने के कम आते थे। अपने एक साल के कारावास के दौरान आंध्र देश के लिए उन्होंने अच्छी खासी ख्याति अर्जित कर ली। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अगर असहयोग आन्दोलन ने मद्रास प्रेसीडेन्सी से ज्यादा प्रगति की तो इसका आधा श्रेय महिलाओं को जाता है।

इलाहाबाद भी इस काल के दौरान एक प्रमुख केन्द्र बनकर उभरा। विजयलक्ष्मी पण्डित और कई अन्य महिलाओं पर गांधीजी का इतना अधिक प्रभाव था कि उनसे मिलने के बाद कई महिलाओं ने नगद और अपने गहने दान कर दिए, उन्होंने खुद भी अपनी सोने की चुड़ियॉ दान दे दी, उनको इस बात का भी अफसोस था कि वो और अधिक दान दे पायी। जिस तरह मोतिलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरू ने असहयोग आन्दोलन में भरपुर सहयोग

किया। उसी तरह स्वरूप रानी और कमला नेहरू ने इलाहाबाद में स्वदेशी के प्रसार में राजनीतिक गतिविधियों में शिरकत कर अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। नेहरू परिवार इस दौरान कई परिवर्तनों से गुजरा। उन्हेंने खादी वस्त्रों को पूणरूपेण अपना लिया था। श्रीमति पंडित के अनुसार खादी न केवल राष्ट्रीय संगाम में भाग लेने वाले के लिए एक यूनिफार्म था, बल्कि गरीबी और अमीरों के बीच भेद मिटाने का स्त्रोत भी था। लखनऊ खादी का प्रमुख केन्द्र बनकर उभरा जहॉ लेडी अब्दुल कादिर की अध्यक्षता में एक कमिटी की स्थापना हुई ताकि महिलाओं के बीच स्वदेशी कार्य को बढ़ावा मिल सकें। मेरठ में पार्वती देवी जो कि एक जोशीली कांग्रेस कार्यकर्ता थी, को उनके उत्तेजित भाषणों की वजह से गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में उन्हें आगरा में कैद कर के रखा गया। इस समय तक महिलाएँ साहस की प्रतिबिम्ब बन चुकी थी। जब जवाहरलाल नेहरू जेल गये थे तो उस समय माँ स्वरूपरानी द्वारा कहे गए एक–एक शब्द महिलाओं की इसी असीमित साहस को स्पष्ट करती हुई प्रतित होती है। उन्होंने कहा था कि मैं खुश हूँ कि जवाहरलाल को आजादी और सच्चाई के पक्ष में खड़े होने का साहस और बहादुर है। उन्होंने महिलाओं से विदेशी कपड़ो को दूषित समझने का आग्रह किया और कहा कि इस कपड़ो में हमारे भाइयों एवं बहनों के खून है इसलिए हम इसे नही पहन सकते। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि जिस काम के लिए जवाहरलाल जेल गए वह रूकना नहीं चाहिए भले ही पर्याप्त पुरूष उपलब्ध नहीं हो तो हम औरतें इस काम को पूरा करेंगे। क्या भारत माता को जेल सिर्फ पुरूषों के लिए है।

इसी तरह पूर्वी भारत में भी इस आन्दोलन ने अपने पाँव फैला रखे थे। विशेष तौर पर बिहार ने गॉधी के असहयोग आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। यहॉ महिलाओं में हसन इमाम और मजहर–उल–हक की पत्नियाँ और सरला देवी तथा सावित्री देवी, जिन्होने मुख्य रूप से खदर और चरखा पर ज्यादा जोर दिया, ने बढ़–चढ़कर गांधी के आन्दोलन में हिस्सा लिया। यहॉ एक महिला समिति की भी स्थापना की गई जो ना केवल नियमित रूप से बैठकें आयोजित करता था बल्कि एक पत्रिका 'महिला दर्पण' भी निकाला। गांधीजी चम्पारण सत्याग्रह के दौरान बिहार में पर्दा प्रथा की जड़ों और उत्पन्न गरीबी से परिचित हो चुके थे, ने कई महिला बैठकों को सम्बोधित किया। जैसा कि इस संबंध में देसाई महोदय ने भी लिखा है – ''महिलाओं की प्रतिक्रिया हर जगह प्रशंसनीय रही है, पर आज भागलपुर की महिलाओं ने एक कीर्तिमान स्थापित किया .... गहनें बरसे नहीं, वो तो टके...... हजारों महिलाओं ने अपने

आपको असाधारण ढ़ंग से प्रस्तुत किया। बिहार में न केवल बड़ी संख्या में राष्ट्रीय विद्यालय खोले गए बल्कि जून 1922 तक 11 जिलों में रूई और चरखा बॉटने के लिए 48 डिपो स्थापित किए गए और महिला नेताओं ने स्वदेशी के पक्ष में प्रचार हेतु विभिन्न जिलों का दौरा किया। 1922 में गया में आयोजित कांग्रेस के वार्षिक सत्र में 500 से ज्यादा महिलाओं की उपस्थिति देखी गई जिससे प्रभावित होते हुए राजेन्द्र प्रसाद ने कहा– ''महिलाओं की उपस्थिति बिहार में जड़ जमायी पर्दा प्रथा को भी धुमिल करती हुई प्रतीत होती है।

बिहार के अलावा उड़ीसा और असम की महिलाओं ने भी असहयोग की पुकार सुनकर इसमें भरपुर सहयोग प्रदान किया। उड़ीसा कांग्रेस ने मजदूरी और स्वयंसेवकों को आन्दोलन के लिए प्रशिक्षित करने हेतु कई केन्द्र खोले। कटक का स्वराज्य आश्रम, जगतासिंहपुर का अलका आश्रम और बालासीर का स्वराज मंदिर इनमें प्रमुख हे। इन सालों में उड़ीसा में गोपालबन्धु चौधरी, जो जगनालाल बजाज फाउडेशन से जुड़े थे और अलका आश्रम की स्थापना की थी, की पत्नी रमा देवी प्रसिद्ध महिला कार्यकर्ता थी। रमा देवी ने परदे का त्याग किया और राष्ट्रवादी संदेश को फैलाने हेतु समर्पण होकर कार्य किया और महिलाओं को विशेषतः चरखा और खादी के उद्देश्य को आगे बढ़ाने को उत्साहित किया। असम की दूर–दराज इलाकों में रहने वाली प्रतिष्ठित परिवार की महिलाओं ने भी आन्दोलन से जुड़ने में काफी सक्रियता दिखाई। आन्दोलन के आगे के चरणों में आसाम की कई लड़कियों ने कांग्रेस स्वयंसेविका के रूप में प्रमुखता से अपना नाम दर्ज करवाया और फिर स्वदेशी के इस्तेमाल और विदेशी कपड़ो के बहिष्कार की जरूरत का प्रचार–प्रसार करने मे जुट गयी। असहयोग खिलाफत सहबंध (1921–22) की वजह से बंगाल ने राष्ट्रीय आन्दोलन की सम्पूर्ण इतिहास में सबसे बड़ी शक्ति और एकता के शिखर को सभवतः प्राप्त कर लिया। 1821 ई. की शुरूआत में कई लड़कियों ने स्कूल–कॉलेज छोड़ दिए जिसमें रेणुका मुखर्जी और उनकी मित्र ललिता रे संभवतया पहली थी। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण नेता थी बसंती देवी, उर्मिला देवी, ज्योर्तिमयी गांगुली, हेमप्रभा मजुमदार आदि। उर्मिला देवी सी. आर. दास के परिवार से ताल्लुक रखती थी। बहुत सी दास महिलाओं ने कुछ अन्य महिलाओं के साथ मिलकर 'देश बन्धु' का चरखा अभियान, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, तिलक स्वराज्य के फंड एकत्रित करने इत्यादि कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार हम देख सकते है कि गांधीजी के प्रयास से देश के कोने–कोने से निकलकर महिलाएँ राष्ट्रीय आन्दोलन में कुद पड़ी। इतनी संख्याओं में महिलाओं का असहयोग आन्दोलन में पूरे जोश, साहस और दृढ़ निश्चयता के साथ कूद पड़ना कोई साधारण बात नही मानी जा सकती है। वास्तव में राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की लगातार बढ़ती संख्या का मुख्य श्रेय महात्मा गांधी को दिया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विवरण में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस में महिलाओं की भूमिका से उद्वत है। आजादी की लड़ाई में भारतीय महिलाओं की मागादारी ने पूरें देश की तस्वीर ही बदल डाली। इनमें मुख्य भूमिका के रूप में सरोजनी नायडू , सरला देवी चौधरानी, अमृता कौर कमला देवी चट्टोपाध्याय, सुशीला नायर और प्रसिद्व नेहरू परिवार की महिलाऍं शामिल थी। इन सभी का नाम हमारे इतिहास के पन्नो पर सुनहरें अक्षरों में उद्वत है। इन सभी ने औरतों पर हो रहे जुल्म, अत्याचार के खिलाफ आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। और औरतों को इस सबो से मुक्ति दिलायी। देश की आजादी में इनलोगों ने बहुत बड़ी भूमिका निभायी।

संदर्भ

1. M.K. Gandhi, Satyagraha is South Africa, Navajivan Achmedebed, 1928, p 255.
2. Bharti Ray, Swadeshi Movement and Womens Awakening in Bengal, 1903-10, Calcutta Historical Journal, January to June, 1985, p. 85-86
3. Valcntine Chirol, Indian Unrest, London, 1910,p.103.
4. Judith M. Brown, Gandhi and Civil Disobedience, The Mahatma in Indian Poetics, 1928-34, Cambridge, Univerdity Press, London, 197, p. 118.
5. Speach at Bhagim Samaj, Bombay, 20 February, 1918 (WMG), Vol- XIV,p.207.
6. Speech at women's Christain College, Madrass, 24th March 1925, CWNG, Vol, XXVI, p. 395.
7. Speech at Ladies Protest meeting Bombay, 6 April 1919, CWMG, Vol, XV.P.189.
8. Ibid We fina a similar echo is most writings of Gandhi Addressed to women thought out the 1920-22 period
9. Speech at Public meeting, Bombay, CWMG, Vol, XIX.p. 553-54.
10. Transcript of Interview with Manmohan Schgal, Oral History Sextion NMMIL,pp, 2-3.

11. Swadeshi in the Punjab CWMG, Vol. XVIII, p.20.
12. The Tribune, 17 June, 1921.
13. The Tribune, 22 March, 1922.
14. For Gandhi's fulsome pralse see Navajivan 16-10-1921.
15. Mahadev Desai, Day to Day with Gandhi, Vol, III, p. 145.